छोड़कर जाने वालों की समस्या को सुलझाना

पाठों की इस शृंखला में अभी तक हमने बाइबल से नेतृत्व के विचार को प्रस्तुत किया है और उन कई गुणों के बारे में बताया है जो कलीसिया के अगुओं में होने आवश्यक हैं। इस तीसरे भाग में, हम कलीसिया के सामने पेश आने वाली आम चुनौतियों (इन्हें समस्याएं भी कहा जा सकता है) में से कुछ एक का अध्ययन करेंगे।

कलीसिया में लीडरशिप पर लिखी गई पुस्तकें शायद व्यावहारिक कसौटी पर सही न उतर पाएं। हो सकता है कि उन्हें पढ़ने के बाद कलीसिया के अगुवे यह पूछने लगें, ''मेरे सामने इस समस्या के समाधान के लिए इससे मेरी ज़्या सहायता हो सकती है?'' ये पाठ इस प्रश्न का उज़र देने में सहायता के लिए ही तैयार किए गए हैं, यद्यपि यह स्पष्ट है कि कलीसिया की हर समस्या का समाधान किसी के पास नहीं है।

पहली चुनौती जिस पर हम चर्चा करना चाहते हैं वह है प्रभु की कलीसिया को छोड़कर जाने की समस्या।[1]

एक बड़ी चुनौती

कोई भी मण्डली अविश्वासी सदस्यों की समस्या से मुज़्त नहीं है। नये नियम में विश्वास से गिरना एक सज़्भावना भी है और तथ्य भी। मसीही लोगों को विश्वास से फिर जाने के विरुद्ध चेतावनी दी गई है (1 कुरिन्थियों 10:12; इब्रानियों 6:4-6) और कइयों के गिर जाने की बात भी कही गई है (गलातियों 5:4; याकूब 5:19, 20)। आज भी यह सत्य है कि मसीही बनने वालों या परिवर्तित होने वालों में से लगभग आधे लोग विश्वास से गिर जाते हैं। बहुत सी जगहों पर मण्डलियों में सदस्यों की गिनती के बराबर ही सदस्य अविश्वासी होंगे।

यह एक समस्या ही नहीं बल्कि त्रासदी है। बाइबल कहती है कि मसीही बनकर फिरने वालों की स्थिति उन लोगों से भी बदतर है जिन्होंने प्रभु की बात कभी मानी ही नहीं (2 पतरस 2:20-22)। अपने परिवार में किसी भाई या बहन के मरने की कल्पना करें! आपके आत्मिक भाई या बहन के विश्वास से गिर जाने पर भी ऐसा ही होता है!

कई मण्डलियां उद्धार पाए हुए लोगों को बचाए रखने के लिए बहुत ही कम काम करती हैं। वे सामने के दरवाज़े से नये सदस्यों का स्वागत तो करती हैं परन्तु पिछले दरवाजे से उन्हें जाने देती हैं। हमें पिछला दरवाजा बंद रखना चाहिए!

इस समस्या के समाधान के लिए हम ज़्या कर सकते हैं ? इसका एक हल इब्रानियों 10:19-25 में मिल सकता है।

इब्रानियों की पत्री उन मसीहियों के नाम लिखी गई थी जिनके विश्वास से गिर जाने का खतरा था। उन्हें सच्चाई से फिर जाने (2:1), ''बुरे और अविश्वासी मन के होकर, जीवते परमेश्वर से दूर'' होने (3:12) इस्राएलियों की तरह आज्ञा न मानकर गिरने (4:11), और विश्वास से यहां तक गिरने के विरुद्ध चेतावनी दी गई थी जहां से वे मन नहीं फिरा सकते थे (6:4-6)। (6:7, 8; 10:26-31, 35, 39; 12:15-17)।

विश्वास से गिरने के स्वभाव में अजीब सी शिक्षाएं पाई जाती हैं (13:7-10); आम तौर पर यही माना जाता है कि ये यहूदी मसीही ही थे जिन्होंने यहूदी मत को छोड़ा था परन्तु फिर से मूसा की व्यवस्था में लौट जाने का खतरा इन पर था।

उनके न केवल शिक्षा से फिर जाने का खतरा था बल्कि व्यावहारिक तौर पर विश्वास से फिरने का भी खतरा था। उनके ''आलसी'' हो जाने का खतरा था (6:12)। वे निराश और निरुत्साहित थे, इसलिए लेखक ने उन्हें कहा, ''ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो'' (12:12)। वे उतने बड़े नहीं हुए थे जितना अब तक उन्हें हो जाना चाहिए था (5:11-14), और उनमें से कई तो इकट्ठा होने में भी असफल हो रहे थे (10:25)।[2]

उनकी स्थिति कुछ जानी-पहचानी सी लगती है। आज कलीसिया के अगुओं को इब्रानियों की पत्री में लिखी गई विशेष बातों के लिए शिक्षा से व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि मसीही लोगों के विश्वास से गिरने के खतरे में पड़ने की बात का सामना करना पड़ता। किसी आधुनिक मण्डली के बारे में यह कैसे लिखा गया था। इसलिए इस समस्या का समाधान इब्रानियों की पत्री और विशेषकर 10:19-25 में दिया गया सुझाव आज के लिए उपयुक्त है। सदस्यों द्वारा कलीसिया को छोड़ जाने की समस्या का समाधान करने के लिए इन आयतों में ज़्या करने का सुझाव है ?

सही शिक्षा

पहले तो, सुझाव है कि मण्डली को सही शिक्षा दी जानी चाहिए।

इब्रानियों की पुस्तक ''उज़म'' के विचार पर ज़ोर देती है। मसीह और उसके मार्ग से जुड़ी हर बात मूसा की व्यवस्था से उज़म है। हमें एक उज़म प्रवक्ता मिला है (1:1, 2)। वह स्वर्गदूतों से उज़म है (1:4-14), जिनके द्वारा व्यवस्था दी गई थी (2:2)। वह मूसा से बड़ा है (3:3) और उसकी याजकाई लेवियों की याजकाई से उज़म है (7:7, 15, 16, 23-28)। उसके द्वारा हमें एक उज़म आशा (7:19), एक उज़म वाचा (7:22; 8:6, 7) मिली है जो उज़म प्रतिज्ञाओं (8:6) और उज़म बलिदान (9:9, 10, 12-14, 23; 10:1-4, 10-18) पर आधारित है। वह उज़म पवित्र स्थान से सेवा करता है (9:11, 23, 24; 12:18-24)।

स्पष्ट रूप से यह शिक्षा कम से कम कुछ पाठकों में पाए जाने वाले गलत विचारों का सामना करने के लिए तैयार की गई थी। इसमें ताड़ना के लिए आधार भी था जो 10:19-25 में मिलता है। इसका आरज़्भ इस प्रकार से होता है:

> सो हे भाइयो, जबकि हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नये और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। जो उसने पर्दे अर्थात अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है, और इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। ...

इस प्रकार पुस्तक के ''शिक्षा सम्बन्धी'' संदेश को संक्षिप्त किया जाता है: (1) पवित्र स्थान में हम यीशु के लहू के द्वारा प्रवेश कर सकते हैं, और (2) हमें परमेश्वर के घराने पर एक महान याजक मिला है। कितने आनन्द की बात है! उसके बाद होने वाली बातों के कितने अच्छे कारण हैं!

इसका अर्थ यह है कि यदि कलीसिया के अगुवे सदस्यों को विश्वासी बनाए रखने में सहायता करना चाहते हैं, तो उन्हें यह बात सुनिश्चित कर लेनी चाहिए कि कलीसिया को अच्छी तरह सिखाया जाए। केवल सही शिक्षा ही काफी नहीं है, पर इसके बिना एक चेले के स्थिर रहने के लिए आधार भी नहीं मिलेगा। पथरीली भूमि पर बोये गए बीज की तरह, ''जब वचन के कारण कलेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त वह ठोकर खाता है'' (मत्ती 13:21ख)।

इसमें यह सुझाव भी दिया जा सकता है कि मसीही लोगों को सिखाए जाने वाले सिद्धांतों में उन आशिषों को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए जो मसीही होने के कारण हमें मिलती हैं। जो चीज़ें हमें महत्वपूर्ण लगती हैं उनकी देखभाल हम ज्यादा करते हैं: पच्चीस पैसे की परवाह कोई नहीं करता, पर यदि पच्चीस हज़ार रुपये हों तो कोई उन्हें खोना नहीं चाहेगा, शायद यदि हम परमेश्वर के ''अद्भुत अनुग्रह'' के कारण मिलने वाली अद्भुत आशिषों की अहमियत को जान जाएं तो हम उनके प्रति लापरवाह नहीं होंगे।

परमेश्वर के पास आते रहना

उन आशिषों के विषय में बात करने के बाद जो मसीह में मिलती हैं (अर्थात जो व्यवस्था के द्वारा नहीं पाई जा सकती), लेखक ने ''आओ ...'' शब्दों से पाठकों के लिए तीन अति आवश्यक बातें बताईं। उनमें पहली, ''तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं'' (इब्रानियों 10:22)। तर्कसंगत रूप से इससे समझ आता है ''हमें पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है'' और ''हमारा ऐसा महायाजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है'' इसलिए हमें परमेश्वर के ''निकट आने'' की पहुंच का इस्तेमाल खुशी से करना चाहिए। ऐसा न करना मूर्खता होगी ज़्योंकि; यह तो मासिक रेल का पास लेकर उसका इस्तेमाल न करने जैसा है या और अच्छी तरह से कहना हो, तो यह एक राजा के साथ भोज करने के निमन्त्रण को अस्वीकार करना है।

मसीही व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन तक कैसे पहुंचे? इब्रानियों 10:22 में

चार विवरण दिए गए हैं, परन्तु वे समानांतर नहीं हैं। ''विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर'' और ''देह को शुद्ध जल से धुलवाकर'' वाक्यांशों में दोनों क्रियाएं संपूर्ण काल में हैं। वे अतीत में पूरे हुए काम की बात करते हैं, जिसके प्रभाव अभी तक हैं। अतीत में ''मेमने के लहू से'' इन मसीही लोगों के ''हृदय पर छिड़काव'' हुआ था और उनकी ''देह धोई गई'' थी; अर्थात उन्होंने बपतिस्मा लिया था। यह तो ऐसा था जैसे वे अंदर और बाहर दोनों तरफ से शुद्ध हो गए हों। इसका परिणाम अभी भी था। वे अभी भी वैसे ही थे जैसे वे बपतिस्मा लेकर बाहर आए थे। अर्थात वे मसीही, अर्थात कलीसिया के सदस्य अर्थात नया जन्म पाए हुए अर्थात अनुग्रह से उद्धार पाए हुए लोग थे।

आयत 22 में तीसरे और चौथे विवरण अर्थात ''सच्चे मन'' और ''पूरे विश्वास के साथ'' वर्तमान में बात करते हैं। एक मसीही परमेश्वर के निकट आने पर, इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर वहां है, ''सच्चे मन'' और ''पूरे विश्वास के साथ'' ऐसा करता है, अर्थात दिलचस्पी लेता है और उस तक पहुंचा जा सकता है!

यह आयत इस बात में भी महत्वपूर्ण है कि क्रिया ''पहुंच'' वर्तमान काल में है जो कि निरन्तर काल है। इसलिए, इसमें यह विचार कि ''चलो निकट आते रहें ...'' शामिल हो सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि लेखक पाठकों को केवल परमेश्वर के पास एक बार आने की शिक्षा ही नहीं दे रहा था, बल्कि वह उन्हें परमेश्वर के पास आते रहने के लिए कह रहा था।

इसलिए यह आयत उन लोगों की ताड़ना करती है जिन्होंने सच्चे मन और विश्वास से परमेश्वर के निकट आते रहने के लिए बपतिस्मा लिया है। ऐसा करने के लिए मसीही व्यक्ति को प्रार्थना के द्वारा लगातार परमेश्वर से बात करते रहना और उसके वचन के द्वारा परमेश्वर की बात को सुनते रहना आवश्यक है। यदि एक मसीही का जीवन बहुत समर्पित है, जिसमें अपनी दिनचर्या से वह परमेश्वर के और निकट आता है, तो उसके फिर से वापस जाने की कोई चिंता नहीं है।

विश्वास में बने रहना

इब्रानियों 10:22-25 में दूसरा आदेश मिलता है, ''अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है'' (आयत 23)। मसीही लोगों पर जिनके नाम इब्रानियों की पत्री लिखी गई थी, सताव और कष्ट आने वाला था। ऐसे समय में उन्हें किस बात की आवश्यकता थी? उन्हें धीरज (10:36; 12:7), दृढ़ प्रतिज्ञा (12:1) और विश्वास की, विशेषकर वफ़ादारी के बोध की आवश्यकता थी (10:39; 11)। 10:23 में लेखक ने उन्हें अपने अंगीकार अर्थात अपने धर्म, अपने विश्वास को ''थामे'' रखने के लिए कहा था। उनके लिए ''दृढ़ विश्वास'' अर्थात ऐसा विश्वास रखना आवश्यक था जो मसीही व्यक्ति के साथ कुछ भी हो जाने पर डगमगाता नहीं है।

मसीही लोगों को आशा ''थामे रखने'' की क्या आवश्यकता है? क्योंकि जो परमेश्वर हमें आशा देता है वह विश्वास योग्य है! वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है! वह हमारे लिए भी

अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार करेगा। विश्वासी रहने के लिए यह कितना बड़ा प्रोत्साहन है!

कलीसिया के अगुवे शिक्षा देकर जिससे नये मसीहियों को चेलों के सामने आने वाली परीक्षाओं की पहले से चेतावनी दी गई हो ऐसे ''दृढ़ विश्वास'' को बढ़ा सकते हैं। चर्चा के लिए कलासें और सर्विस प्रोजेज़्ट जिनमें नये सदस्यों को विश्वास में रहने के लिए आने वाली कठिनाइयों का वर्णन होता है, ऐसा उन्हें आत्मिक रूप से खतरनाक ''वास्तविक संसार'' के लिए दृढ़ करने के लिए ''सुरक्षित'' वातावरण में इस्तेमाल किया जाए।

एक दूसरे को उत्साहित करना

इब्रानियों 10:22-25 का तीसरा आदेश 24 और 25 आयतों में मिलता है: ''और प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिए एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों - त्यों और भी अधिक यह किया करो।''

यह छोड़ जाने की समस्या का सबसे बढ़िया हल हो सकता है। कलीसिया के अगुओं को हर सदस्य को यह सिखाना चाहिए कि उसे लगातार आत्मिक विकास तथा विश्वास के साथ अटल प्रतिबद्धता के द्वारा अपने विश्वास को बनाए रखना आवश्यक है (देखें गलतियों 6:5 और यहूदा 21)। तो भी, विश्वासी बने रहने के लिए हमें एक दूसरे को उत्साहित करने तथा एक दूसरे से उत्साह लेते रहना चाहिए।

इब्रानियों के नाम पत्री के लेखक ने इस पारस्परिक उत्साह के बारे में छह सच्चाइयां बताई हैं: (1) यह एक दूसरे की चिंता के कारण होना चाहिए। हमें ''विचार करना चाहिए कि प्रेम तथा भले कार्यों में एक दूसरे को कैसे मिलाया जा सकता है।'' इसमें सुझाव मिलता है कि हमें इसे पूरा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए। (2) यह ''उज़ेजना'' को शामिल करना है। लेखक ने ''एक दूसरे के साथ इकट्ठा होने'' के लिए कहा, जिसका अर्थ उज़ेजित करना, उकसाना, दबाव डालना, या प्रेरित करना हो सकता है। (3) इससे प्रेम तथा भले कार्यों में उत्साह मिलना चाहिए। मसीही लोगों को क्रोध या बुरे कार्यों के लिए नहीं बल्कि ''एक दूसरे के साथ *प्रेम तथा भले कार्यों के लिए* इकट्ठे होना'' चाहिए। (4) अन्य समयों की तरह, कलीसिया की सभाओं में भी होना चाहिए। यह आयत में ''आपस में इकट्ठा होना छोड़ने'' के विरुद्ध चेतावनी देती हुई आगे बढ़ती है और फिर ऐसी उपेक्षा करने की तुलना ''एक दूसरे को उत्साहित करने'' से की गई है। कलीसिया के इकट्ठा होने पर हर हालत में, एक दूसरे का उत्साह बढ़ना चाहिए। (5) यह उस अंतिम घटना अर्थात प्रभु के दिन, द्वितीय आगमन को याद करते हुए होना चाहिए जो जीवन को अर्थ देता है। हमें ''उस दिन के निकट आने को देखकर'' एक दूसरे को उत्साहित करते रहना चाहिए।[3] (6) यह आवश्यक है ज़्योंकि विश्वास से गिरने अर्थात पाप में लगे रहने के भयंकर परिणाम हैं (10:26-31)।

इब्रानियों की पत्री में यहां पारस्परिक उत्साह बढ़ाने का आग्रह पहली बार नहीं है। उन इस्राएलियों के उदाहरण का इस्तेमाल करते हुए जो जंगल में विश्वास से गिर गए थे, लेखक ने कहा, ''हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी न मन हो, जो जीवते

परमेश्वर से दूर हट जाए। बरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए'' (इब्रानियों 3:12, 13)। शायद इन आयतों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू *हर रोज़ की* ताड़ना के लिए इसकी शर्त है। कलीसिया के सदस्य इस शर्त को तब तक पूरा नहीं कर सकते जब तक वे एक दूसरे के साथ केवल सार्वजनिक सभाओं में ही मिलते हों।

एक दूसरे को समझाते रहने और उत्साहित करने की आवश्यकता विश्वास से गिरने के ज्वार भाटे को रोकने के कार्यक्रम के तीन भागों का सुझाव है।

पहला तो एक-दूसरे की जिज़्मेदारी है। हमें एक दूसरे की, और विशेषकर नये मसीहियों की जिज़्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए। बाइबल सिखाती है कि हम अपने भाई के रखवाले *हैं।* (देखें गलतियों 6:2)। कलीसिया के अगुओं को दूसरों की विशेष जिज़्मेदारी मिली है: वे उनकी तरह झुंड के प्राणों की रखवाली करते हैं जिन्हें हिसाब देना पड़ेगा (इब्रानियों 13:17)। इसके अलावा, जैसे एक अच्छे परिवार का हर सदस्य दूसरे सदस्य के लिए अपनी जिज़्मेदारी महसूस करता है, वैसे ही कलीसिया के परिवार में कलीसिया के हर सदस्य को दूसरे सदस्य के लिए अपनी जिज़्मेदारी समझनी चाहिए, ''हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं'' (इफिसियों 4:25ख)।

दूसरा निकट सज़्बन्ध है। मसीही लोगों को दूसरे मसीहियों के साथ निकट सज़्बन्ध बनाने चाहिए। उत्साह को अधिक प्रभावशाली ढंग से वही लोग देख सकते हैं जो घनिष्ट मित्र होते हैं। इसके अलावा,इस बात का परिणाम यह है कि अन्य मसीहियों के साथ हमारे सज़्बन्धों की निकटता से ही यह बात तय होती है कि हम विश्वासी बने रहेंगे या नहीं।

1973 में मैंने एक कलीसिया के पहले पांच वर्षों में हुए विकास का अध्ययन किया जिसके साथ हमने सिडनी तथा ऑस्ट्रेलिया में काम किया था। मैंने पाया कि मसीही बनने वालों के तीन समूह अन्य समूहों से अधिक विश्वास में बने रह सकते थे: (1) जिनके मसीही बनने के समय कलीसिया में निकट मित्र या सज़्बन्धी थे, (2) जो मसीही बनने से पहले लज़्बे समय से कलीसिया की आराधना सभाओं में भाग ले रहे थे और (3) जो पच्चीस वर्ष से कम आयु के थे। *इन तीनों मामलों में, सभी नये बने मसीहियों के बपतिस्मा लेने से पहले भी सदस्यों के साथ निकट निजी सज़्बन्ध थे।* आराधना में भाग लेने वाले लोगों ने कलीसिया में से पहले ही मित्र बना लिए थे और पच्चीस से कम वर्ष की आयु वालों में प्रत्येक शुक्रवार शाम को मिलने वाले एक यूथ ग्रुप के सदस्य अधिक थे।

फलेविल यीकले, जूनियर ने *वाय चर्चज़ ग्रो* में कहा है कि उसकी खोज से पता चला है कि यदि नये बने मसीही अपने मित्र बदल दें, तो उनके मसीह बने रहने की सज़्भावना अधिक थी।[4] उसने कहा, ''इन आंकड़ों से सुझाव मिलता है कि लोगों द्वारा मण्डली के सदस्यों के साथ पारिवारिक सज़्बन्ध बना लेने पर उनके विश्वासी बने रहने की सज़्भावना अधिक थी। जब उन्होंने ऐसे व्यज़्तिगत सज़्बन्ध नहीं बनाए, तो उनके कलीसिया से निकलने की सज़्भावना अधिक थी।''[5] उसकी खोज से पता चला कि यदि किसी नये सदस्य ने छह माह के भीतर सात मित्र नहीं बनाए (या पहले से नहीं थे), तो उसके छोड़ जाने की

सज़्भावना अधिक होगी।[6] इस बात को कहने का दूसरा ढंग है कि जब तक नये परिवर्तित अर्थात मसीही *कलीसिया के भीतर* पारिवारिक सज़्बन्ध नहीं बनाते, तब तक उनके विश्वास से फिर जाने की सज़्भावना भी अधिक होती है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि कैसे सज़्बन्ध बनाए जाते हैं! नये सदस्यों को अन्य मसीहियों के साथ विशेष सज़्बन्ध बनाने चाहिए। ये सज़्बन्ध आराधना सभाओं के बाद ''हेलो'' कहने से कहीं अधिक गूढ़ अर्थात *निकट* होने चाहिए। ये *तुरन्त बन जाने* चाहिए। खोज से संकेत मिलता है कि यदि ये सज़्बन्ध शीघ्र नहीं बनाए जाते, तो नये बने मसीहियों के विश्वास से गिर जाने की सज़्भावना अधिक रहती है। ''पहले छह माह ज्यादा नाजुक होते हैं। इस समय के अन्दर नये लोग यदि देह में घुल मिल नहीं पाते तो पिछले दरवाजे से उनके बाहर जाने की अधिक सज़्भावना होती है।''[7] यह मिलना *लगातार* होना चाहिए अर्थात केवल मिलने और अपनी सभाओं में नये सदस्य को जानने के लिए ही नहीं बल्कि हमें हर रोज़ उसे सिखाना चाहिए (इब्रानियों 3:13)।

हम आवश्यक निजी सज़्बन्ध कैसे बना सकते हैं? (1) हम उन लोगों को परिवर्तित कर सकते हैं जिनके पहले से ही कलीसिया में लोगों से निजी सज़्बन्ध हैं। (2) हम दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं। अकेलापन और बाहरीपन आधुनिक मनुष्य के लिए महामारी की तरह है। जब लोग कलीसिया में आते हैं तो वे अज़्सर एक दूसरे से मिलने की इच्छा रखते हैं। आइए हम इस बात को सुनिश्चित करें कि उन्हें ऐसा ही मिले। (3) नये मसीही के साथ हम कई बातें करके सज़्पर्क बना सकते हैं। मेरा सिखाने वाला और उसका सीखने वाला होना यह संकेत देता है कि हमारा सज़्बन्ध एक बात पर है। यह हमें एक रस्सी से एक दूसरे के साथ बांधता है। यदि हमारे बच्चे हैं, हम एक ही जगह काम करते हैं, हमारा एक ही शौक है, और एक ही तरह का मनोरंजन पसन्द करते हैं, तो हमारा सज़्बन्ध केवल एक ही तरह से (शिक्षक और सीखने वाले के रूप में) नहीं बल्कि पांच तरह से है। हम तो एक दूसरे के साथ पांच रस्सियों से बंधे हुए हैं। इस तरह का निजी सज़्बन्ध नये मसीही को विश्वासी रहने के लिए उस एक सज़्बन्ध अर्थात शिक्षक/छात्र पर ही आधारित नहीं है। (4) हम नये बने मसीही की अधिक से अधिक सदस्यों से जान पहचान करवाकर उसकी सहायता कर सकते हैं। (5) हम उन्हें घर बुलाकर और संगति पर ज़ोर दे सकते हैं ज़्योंकि इकट्ठे भोजन करने से, निजी सज़्बन्ध मज़बूत होते हैं। (6) हम उस सदस्य को जितनी जल्दी सज़्भव हो सके कलीसिया के कार्यक्रम अर्थात बाइबल कलास में आने, बिज़नेस मीटिंग में भाग लेने, आराधना में अगुआई करने, और दूसरे सदस्यों के साथ काम करने में शामिल कर सकते हैं। इकट्ठे काम करके हम अपने निजी सज़्बन्धों को मज़बूत करते हैं।

सभी सदस्यों को विश्वासी रखने के कार्यक्रम का तीसरा भाग अविश्वासी होने वालों का तुरन्त पता लगाना है। एक दूसरे के प्रति हमारी प्रतिबद्धता इतनी गंभीर है कि हमें उस सज़्बन्ध को जो हमें बिना किसी संघर्ष के इकट्ठे करता है तोड़ने की किसी को भी अनुमति नहीं देनी चाहिए। बाइबल चाहती कि हम विश्वास से फिर जाने वाले भाई को वापस लाएं: ''हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो,

नम्रता के साथ ऐसे को संभालो ...'' (गलतियों 6:1; याकूब 5:19, 20 भी देखें)।

हमें न केवल भटकने वालों को ढूंढ़ने की जिज़्मेदारी मिली है बल्कि उन्हें तुरन्त ढूंढ़ना चाहिए! दो महीने तक प्रतीक्षा करना (जो दो वर्षों से कहीं कम है) बहुत लज़्बा है! ज़्या आप किसी ऐसे परिवार की कल्पना कर सकते हैं जिसमें रात के भोजन के समय जवान लड़के जौनी की जगह खाली हो, और फिर भी किसी को कोई परेशानी न हो, किसी को उसकी चिंता न हो, कोई उसे छह महीनों तक ढूंढ़ने न जाए, जब कोई कहे, ''बताओ, ज़्या किसी ने थोड़ी देर पहले जौनी को देखा है? नहीं? शायद हमें चलकर बाहर उसे ढूंढ़ना चाहिए।'' कोई भी ऐसे परिवार के साथ रहना पसंद नहीं करेगा। निश्चय ही कलीसिया को इस प्रकार का परिवार नहीं बनना चाहिए। हमें उसी समय यह पता होना चाहिए कि कौन नहीं आया, उनकी चिंता करनी चाहिए, और तुरन्त बाहर जाकर उन्हें वापस लाना चाहिए।

खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ने का ढंग उन्हें ढूंढ़ने की आवश्यकता जितना महत्वपूर्ण नहीं है! कई बार हम इतने भयभीत हो जाते हैं कि हम गलत युज़्तियों का इस्तेमाल करते हैं कि हमने कुछ किया ही नहीं। नीचे दी गई कहानी इसे स्पष्ट कर सकती है:

एक कठोर, अशिक्षित आदमी जो नया - नया मसीही बना था प्रभु के लिए परीक्षा हो रही थी। उसने प्रचारक से कुछ करने को कहा। प्रचारक ने, जिसे कोई अधिक उपयुज़्त कार्य समझ नहीं आ रहा था, उसे सदस्यों की एक सूची दिखाई जो कई महीनों से आराधना में नहीं आ रहे थे, उसे कलीसिया के कुछ कागज दिए, और कहा, ''आप इन लोगों को आराधना में आने के लिए उत्साहित करने वाले पत्र लिख सकते हैं।'' सबसे महत्वपूर्ण बात उन खो चुके लोगों को ढूंढ़ने का ढंग नहीं बल्कि उन्हें ढूंढ़ना है!

इब्रा. 10:22-25 के इस तीसरे आदेश का अर्थ है कि कलीसिया के अगुओं को कार्यक्रम बना लेने चाहिए जिनसे कलीसिया के भीतर एक ''परिवार की भावना'' पैदा हो और (1) यह विश्वास बने कि मसीही लोगों की एक दूसरे के प्रति जिज़्मेदारी है; (2) सदस्यों में निकट सज़्बन्ध बढ़े, विशेषकर नये सदस्यों और विश्वास में पहले से दृढ़ लोगों में; और (3) अविश्वासी सदस्यों के दूर जाने से पहले ही उन्हें वापस लाने का प्रयास चलता रहे।

सारांश

इब्रानियों 10:19-25 में यह सुझाव है कि छोड़कर जाने की समस्या का समाधान चाहने वाले अगुओं को इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कार्यक्रम बनाने, आगे बढ़ने और उन्हें बनाए रखने की आवश्यकता है:

- यह देखने का प्रयास करें कि सब सदस्यों को परमेश्वर का वचन सिखाया जाता है।
- निजी मसीहियों को परमेश्वर के निकट आते रहने के लिए उत्साहित करें।
- मसीही लोगों को परीक्षाओं में दृढ़ रहने वाला विश्वास बढ़ाने में सहायता करें।
- सदस्यों के बीच एक दूसरे को उत्साह देते रहें।

हमें अपने सदस्यों की 50 प्रतिशत हानि को ''सामान्य'' या ''जिसे टाला नहीं जा सकता'' के रूप में नहीं मानना चाहिए। बेशक हमारे प्रयासों के बावजूद कुछ लोग विश्वास से गिर जाएंगे, बिल्कुल वैसे – जैसे इस तथ्य के बावजूद कि यीशु के साथ यहूदा गिर गया था, हमें इसे एक नियम के रूप में होने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, न ही हमें इस समस्या के प्रति कठोर होना चाहिए।

हर मसीही बहुमूल्य है। हम उनमें से किसी को भी खोना नहीं चाहते हैं! यीशु ने लूका 15:4-6 में एक चरवाहे की कहानी सुनाई जिसकी सौ भेड़ें थीं और उनमें से एक भेड़ खो गई थी। ज़्या वह निन्यानवे भेड़ों से संतुष्ट था? ज़्या उसने कहा, ''मुझे 99 प्रतिशत सफलता मिल गई है! मैं आज रात आराम से सो सकता हूं ज़्योंकि मेरी केवल एक ही भेड़ खोई है''? नहीं, वह चरवाहा उस एक भेड़ को ढूंढ़ने के लिए तब तक घूमता रहा जब तक उसे वह मिल न गई! यीशु की नज़र में एक भेड़ अर्थात एक व्यज़्ति की आत्मा बहुमूल्य थी! हमारे लिए भी एक व्यज़्ति की आत्मा बहुमूल्य होनी चाहिए, विशेष रूप से इसलिए ज़्योंकि वह हमारा भाई या हमारी बहन है!

पाद टिप्पणियां

[1]इस पाठ में कॉय रोपर, ''कीपिंग द सेवड सेवड,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* 11 (जून 1990): 44-49 से बहुत सी बातें ली गईं। [2]यह भी सज़्भावना है कि इब्रानियों 13:1-6 और अन्य आयतों की व्यावहारिक आवश्यकताएं, कलीसिया की विशेष आवश्यकताओं या कमियों की झलक देती हैं। [3]स्पष्टत: इब्रानियों 10:25 में इस आयत के अन्य भागों की अन्य व्याज़्याओं की तरह ''दिन'' की अन्य व्याज़्याएं हैं। [4]ज़्लेविल आर. यीकले, जूनि. *वाय चर्चज़ ग्रो,* 2रा संस्क. (अरवदा, कोलो.: क्रिश्चियन कज़्युनिकेशन्स, 1979), 72. [5]वहीं, 54. विन आर्न और चार्ल्स आर्न, ''ज़्लोज़िंग द इवेंजलिस्टिक बैक डोर,'' *लीडरशिप* (स्प्रिंग 1984), 29 भी देखें। [6]आर्न एण्ड आर्न, 29 द्वारा उद्धृत। [7]वहीं, 30. [8]यह मेरी सबसे पसंदीदा कहानियों में से एक है, परन्तु मुझे यह याद नहीं है कि मैंने यह पहली बार कहां से ली और यह भी नहीं कह सकता कि किसने लिखी थी।

परमेश्वर का वचन हमारे लिए क्या करता है?

इन अठारह लाभों से हमें परमेश्वर के वचन को जानने की इच्छा जागृत होनी चाहिए :

1. उसका वचन हमें सिखाता है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।
2. उसका वचन हमें मार्ग दिखाता है (भजन संहिता 119:105)।
3. उसका वचन हमें सुधारता है (2 तीमुथियुस 3:16, 17; इब्रानियों 4:12, 13)।
4. उसका वचन हमें शिक्षित करता है (2 तीमुथियुस 3:16,17; व्यवस्थाविवरण 6:1-9; भजन संहिता 119:1-6)।
5. उसका वचन हमें पवित्र करता है (1 पतरस 1:22)।
6. उसका वचन हमें स्वतन्त्र करता है (यूहन्ना 8:31, 32)।
7. उसका वचन हमारा उद्धार करता है (रोमियों 1:16)।
8. उसका वचन फिर से हमें परमेश्वर के स्वरूप पर बनाता है (1 पतरस 1:23, 24)।
9. उसका वचन हमें पवित्र करता है (यूहन्ना 17:17)।
10. उसका वचन हमें शांति देता है (भजन संहिता 119:50, 76; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18)।
11. उसका वचन हमारी रक्षा करता है (इफिसियों 6:17)।
12. उसका वचन हमें जीवन देता है (मत्ती 4:4)।
13. उसका वचन बढ़ने की गारंटी देता है (1 पतरस 2:2; 2 पतरस 3:18)।
14. उसका वचन गलती करने पर हमें डांटता है (2 तीमुथियुस 3:16, 17; 4:2, 3)।
15. उसका वचन हमें बदल डालता है (भजन संहिता 119, 59, 60; रोमियों 12:2)।
16. उसका वचन हमें परिपक्व करता है (इफिसियों 4:15; प्रेरितों 20:32)।
17. उसका वचन हमें परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य बनाता है (2 तीमुथियुस 2:15)।
18. उसका वचन हमें अनन्तकाल के लिए प्रतिफल देता है (प्रेरितों 20:32; 1 पतरस 1:3-12)।